Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजलिस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अक्तूबर/2021ई०

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

OCTOBER-2021

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆9876332272 | Manager: Syed Tufail Ahmad Shahbaz ✆8968184270
Annual Subscription: Rs-210/- | Per Issue: Rs-20/- | Weight: 50-100 gms/Issue

25-9-2021को मज्लिस अंसारुल्लाह गुजरात द्वारा आयोजित पहला सालाना इज्तिमा के अवसर पर इनामात तक़सीम करते हुए श्री सय्यद अब्दुल हादी काशिफ़ नाज़िम गुजरात।

25-9-2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह गुजरात द्वारा आयोजित पहला सालाना इज्तिमा के बाद ली गयी एक ग्रुप फ़ोटो

अगस्त 2021 में मज्लिस अंसारुल्लाह करुनागापल्ली (केरल) द्वारा मस्जिद में आयोजित तरबियती इजलास में हाज़िर अंसार का एक दृश्य।

अगस्त 2021 में मज्लिस अंसारुल्लाह करुनागापल्ली (केरल) द्वारा मस्जिद में आयोजित तरबियती इजलास के स्टेज का दृश्य।

26-8-2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह मोहल्ला दारुल अनवार (क़ादियान) द्वारा मस्जिद अनवार में आयोजित तरबियती इजलास के स्टेज का दृश्य।

26-8-2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह मोहल्ला दारुल अनवार (क़ादियान) द्वारा मस्जिद अनवार में आयोजित तरबियती इजलास में हाज़िर अंसार का एक दृश्य।

25-9-2021को मज्लिस अंसारुल्लाह गुजरात द्वारा आयोजित पहला सालाना इज्तिमा के अवसर पर इनामात तक़्सीम करते हुए श्री सय्यद अब्दुल हादी काशिफ़ नाज़िम गुजरात।

26-8-2021को मज्लिस अंसारुल्लाह मोहल्ला ताहिर (नंगल बाग़बाना, क़ादियान) द्वारा मस्जिद बशारत में आयोजित तरबियती इजलास का एक दृश्य।

01-8-2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह शिमोगा (कर्णाटक) द्वारा क़ब्रिस्तान में आयोजित वक़ारे अमल (श्रमादान) का एक दृश्य।

अगस्त 2021 में मज्लिस अंसारुल्लाह चेलककरा (ज़िल्ला त्रिसूर, केरल) द्वारा आयोजित पिकनिक का एक दृश्य।

बिस्मिल्लाह line: بسم اللہ الرحمٰن الرحیم نحمدہٗ و نصلی علیٰ رسولہ الکریم و علیٰ عبدہ المسیح الموعود

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ
سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 19 **अक्तूबर 2021** **Issue - 10**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - प्रचलित ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहो का आरम्भ कब से हुआ?	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन औलिया तथा अंबिया की याद से रहमत नाज़िल होती है	6
जमाअत का निज़ाम और रसूल्लाह सल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श	8

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
सय्यद तुफैल अहमद शहबाज़
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن كريم दर्सुल क़ुर्आन

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(सूर: अल अहज़ाब आयत 57)

अनुवाद -अवश्य अल्लाह और इस के फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम भी उस पर दुरूद और ख़ूब ख़ूब सलाम भेजो।

दर्सुल हदीस

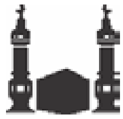

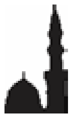

عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ خَرَجَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْنَا
يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَدْ عَلِمْنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ عَلَيْكَ فَكَيْفَ نُصَلِّيْ عَلَيْكَ ؟ قَالَ قُوْلُوْا اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ (बुख़ारी किताबुल इस्तेज़ान)

अनुवाद - ::हज़रत कअब रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हमारे हाँ तशरीफ़ लाए तो हम ने निवेदन किया। हे अल्लाह के रसूल हमें यह तो पता है कि आप पर सलाम किस तरह भेजा जाए लेकिन यह पता नहीं कि आप पर दरूद कैसे भेजें। आप ने फ़रमाया। तुम मुझ पर इस तरह दुरूद भेजा करो। हे अल्लाह !तू मुहम्मद और मुहम्मद की ऑल पर दुरूद भेज जिस तरह तूने इब्राहीम और इब्राहीन की आल पर दुरूद भेजा। हे अल्लाह ! मुहम्मद और मुहम्मद की ऑल पर बरकत भेज जिस तरह तूने इब्राहीम और इब्राहीन की आल पर बरकत प्रदान की जिस तरह तूने इब्राहीम की आल को बरकत प्रदान की। तू प्रशंसा वाला और सम्मान वाला है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

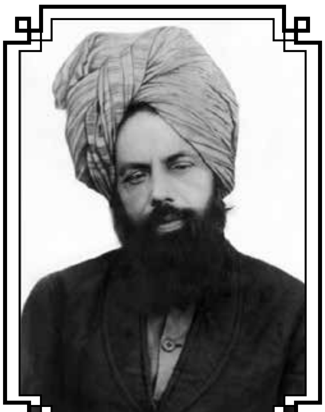

दुरूद शरीफ़ का विरद करने वाला न केवल परलोक में सवाब पाता है बल्कि वह इस दुनिया में भी सम्मान पाता है।

"एक बार ऐसा संयोग हुआ कि दुरूद शरीफ़ के पढ़ने अर्थात आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजने में एक ज़माना तक मुझे बहुत लीनता रही क्योंकि मेरा विश्वास था कि ख़ुदा तअला की राहें बहुत गूढ़ राहें हैं। वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम के बिना मिल नहीं सकतीं जैसा कि ख़ुदा भी फ़रमाता है اِبْتَغُوْۤا اِلَیْهِ الْوَسِیْلَةَ (अलमायद 36) तब एक ज़माना के बाद में ने कश्फ़ी हालत में देखा कि दो सक्के(पानी पिलाने वाले) अर्थात माशकी आए और एक भीतरी रास्ता से और एक बैरूनी राह से मेरे घर में दाख़िल हुए हैं और उन के काँधों पर नूर की मुश्कीं हैं और कहते जाते हैं هٰذَا بِمَا صَلَّيْتَ عَلٰى مُحَمَّدٍ अर्थात यह बरकतें उस दुरूद के कारण से हैं जो तूने ने महमद सल्ललाहो अलैहि वसल्लम पर भेजा था।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 131)

"दुरूद शरीफ़ की जितनी फ़ज़ीलतें वर्णन की जाएं कम हैं। मैं ख़ुद उस का अनुभवी हूँ। मुझ पर तो ख़ुदा तअला के इनाम हैं। दुरूद शरीफ़ की बरकतें और प्रभाव का इस में अधिक हिस्सा है। दुरूद शरीफ़ का विर्द करने वाला न केवल परलोक में सवाब पाता है बल्कि वह इस दुनिया में भी सम्मान पाता है। लेकिन बावजूद उस के मैं किसी ऐसे दुरूद का मानने वाला नहीं कि जो इन्सान को ख़ुदा से बेनयाज़ कर दे और जिसके विरिद के बाद क़ज़ा तथा क़दर के आदेश ख़ुदा तआला के हाथ में न रहें बल्कि दुरूद पढ़ने वाला उन पर हाकिम हो जाये। इस स्थान पर हुज़ूर के कलाम में जोश के चिन्ह स्पष्ट हो गए और चेहरे पर लाली आ गई और फ़रमाया कि बेशक दुरूद शरीफ़ की बड़ी बरकतें और प्रभाव हैं और उस को प्रचुरता से पढ़ने से इन्सान पर बरकतें अवतरित होती हैं और इस की बरकत से दुआएं स्वीकार होती हैं और इस के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं। लेकिन बावजूद उस के इन्सान को कभी ख़ुदा तआला की बेपर्वाई और बेनियाज़ी से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए। कभी ऐसा भी वक़्त होता था कि जिस नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेज कर लोग ख़ैर तथा बरकत पाते थे। ख़ुद उसे भी ख़ुदा के आदेशों के आगे स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई उपाय न था। अत: दुरूद ख़ूब पढ़ो और बहुत अधिक पढ़ो। परन्तु इस बात को भी हमेशा सम्मुख रखो और ख़ुदा तआला को सम्पूर्ण क़ादिर और बेनयाज़ ख़ुदा समझो और स्वीकार करने पर ईमान की बुनियाद रखो।"

(मुक्तूबात बनाम हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्माईल साहिब हलालपूरी उद्धरित रिसाला दुरूद शरीफ़ 292)

सम्पादकीय

प्रचलित ईद मीलादुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आरम्भ कब से हुआ?

इस्लाम धर्म के संस्थापक सरवर-ए-कायनात फ़ख़र-ए-मौजूदात हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जन्म अस्हाब अलफ़ील की घटना (जब ख़ाना काबा पर यमन के गवर्नर अबराह ने हमला किया था।) के पच्चीस दिन बाद हुई थी। प्रसिद्ध रूप से तारीख़ 12 रबी उल अव्वल 20 अगस्त 570 ई वर्णन की जाती है। (सीरत ख़ातमन्नबय्यीन) यद्यपि निर्दिष्ट जन्म तिथि के बारे में मतभेद है।

इस्लामी शरीयत के अनुसार इस्लाम में केवल दो ईदों का वर्णन मिलता है। एक ईदुल फ़ितर और दूसरा ईदुल अज़हियाह ,तीसरी किसी ईद का वर्णन नहीं मिलता, हां जुम्अ वाले दिन को भी ईद का दिन कहा गया है। इस के अतिरिक्त किसी और ईद का मनाना बिद्दत में शामिल होगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को यह ताकीदी नसीहत की है: فَعَلَيْكُمْ بِسُنَّتِي وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِينَ الْمَهْدِيِّينَ अर्थात मेरे बाद जब मतभेद होंगे तो तुम मेरी और मेरे ख़ुलफ़ाए राशिदीन की सुन्नत का अनुकरण करना।

(सुनन इब्न माजा किताब अब्वीबुस्सुन्नत अलर्रअशेदीन)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्अव्वल रज़ी अल्लाह अन्हो ने फ़रमाया

"ईद मीलाद बिद्दत है। ईदें दो हैं। इस तरह तो लोग नई नई ईदें बनाते जाऐंगे। और अहमदी कहेंगे कि मिर्ज़ा साहिब पर इल्हाम अव्वल के दिन एक ईद हो। यौम विसाल पर ईद हो। आँहज़रत सल्लल्लाहो के सबसे बड़े मुहब्बत करने वाले तो सहाबा थे। उन्होंने कोई तीसरी ईद नहीं मनाई ...अगर ईद मीलाद जायज़ होती। तो हज़रत साहिब (मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) आँहज़रत सल्लल्लाहो के बड़े मुहब्बत करने वाले थे। वह मनाते। ऐसी ईद निकालना जहालत की बात है। और निकालने वाले सिर्फ़ लोगों को ख़ुश करना चाहते हैं। वर्ना उनमें कोई धार्मिक जोश नहीं।"

(हयात नूर अध्याय पृष्ठ 508)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

" मैं यह भी बता दूं कि मौलूदुन्नबी (सल.) जो है, यह कब से मनाना शुरू किया गया। इस की तारीख़ क्या है? मुस्लमानों में भी कई फ़िरक़े मीलादुन्नबी के मानने वाले नहीं हैं। इस्लाम की पहली तीन सदियां जो बेहतरीन सदियां कहलाती हैं इन सदियों के लोगों में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जो मुहब्बत पाई जाती थी वह इन्तिहाई दर्जा की थी और वे सब लोग सुन्नत का बेहतरीन इल्म रखने वाले थे और सबसे ज़्यादा इस बात के हरीस थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीयत और सुन्नत की पैरवी की जाए। लेकिन इस के बावजूद तारीख़ हमें यही बताती है कि किसी सहाबी रज़ि या ताबई जो सहाबा रज़ि के बाद आए, जिन्होंने सहाबा रज़ि को देखा हुआ था, के ज़माने में ईद मीलाद उन्नबी (सल.) का ज़िक्र नहीं मिलता। वह शख़्स जिसने उस का आरम्भ क्या, उस के बारे में कहा जाता है कि यह अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह कदाह था। जिसके अनुयायी फ़ातिमी कहलाते हैं और

वह अपने आपको हज़रत अली रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की औलाद की तरफ़ सम्बंधित करते हैं। और इस का सम्बन्ध बातिनी मज़हब के संस्थापकों में से था। बातिनी मज़हब यह है कि शरीयत के कई पहलू ज़ाहिर होते हैं, कुछ छिपे हुए होते हैं और इस की यह अपनी तशरीह करते हैं... पस सबसे पहले जिन लोगों ने मीलादुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आयोजन शुरू किया वह बातिनी मज़हब के थे और जिस तरह उन्होंने शुरू किया वह अवश्य एक बिद्दत थी। मिस्र में उनकी हुकूमत का ज़माना 362 हिज्री बताया जाता है।" (ख़ुत्बा जुम्अः 13 मार्च 2009 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की तहरीक पर सारे हिन्दुस्तान के में पहला महान सीरतुन्नबी दिवस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दिनांक 17 जून 1928 ई को मनाया गया। हुज़ूर अनवर अयदहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं

"मौलूद के दिन जलसा करना, कोई समारोह आयोजित करना मना नहीं है शर्त यह है कि इस में किसी भी प्रकार की बिदअतें न हों। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत वर्मन की जाए.. इस तरह पूरे देश में और पूरी दुनिया में हो तो इस में भी कोई हर्ज नहीं है।' (ख़ुत्बा जुम्अः 13 मार्च 2009 ई)

अल्लाह तआला हमें इन हिदायत पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे आमीन

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

औलिया और अंबिया की याद से रहमत नाज़िल होती है।

भेज दरूद उस मुहसिन पर तू दिन में सौ सौ बार
पाक मुहम्मद मुस्तफा नबियों का सरदार

19 अक्तूबर 2021 ई अर्थात 12 रबी उल्व्वल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विलादत का बाबरकत दिन है। अल्लाह तआला ने आप को समस्त संसारों के लिए रहमत बनाकर भेजा है। इसलिए शुक्रगुज़ारी के तौर पर अल्लाह तआला के आदेश के ऊपर अनुकरण करते हुए आप पर प्रचुरता से दुरूद भेजना चाहिए। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक व्यक्ति ने मौलूद ख़वानी पर सवाल किया। इस पर आप ने फ़रमाया :

''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन बहुत उत्तम है बल्कि हदीस से साबित है कि औलिया और अंबिया की याद से रहमत नाज़िल होती है और ख़ुद ख़ुदा ने भी अंबिया के वर्णन का प्रोत्साहन दिया है लेकिन अगर उस के साथ ऐसी बिदअतें मिल जाऐं जिनसे तौहीद में रोक हो तो वह जायज़ नहीं। ख़ुदा की शान ख़ुदा के साथ और नबी की शान नबी के साथ रखो। आजकल के मौलूदों में बिद्दत के शब्द ज़्यादा होते हैं और वे बिदअतें ख़ुदा की इच्छा के ख़िलाफ़ हैं। अगर बिदअतें न हों तो फिर तो वो एक वाज़ है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बिअसत,पैदाइश और वफ़ात का वर्णन हो तो सवाब का कारण है। हम मजाज़ नहीं हैं कि अपनी शरीयत या किताब बना लें।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 159 प्रकाशन 1984 ई)

दुरूद शरीफ़ पढ़ने से अल्लाह तआला तंगी को दूर करता है। जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है।كَثْرَةُالذِّ كْرِ وَالصَّلٰوةِعَلَيَّ تَنْفِى الْفَقْرَ प्रचुरता से अल्लाह तआला को याद करना और मुझ पर दुरूद भेजना तंगी के दूर होने का माध्यम है।

(जिलाउल अफ़हाम उद्धरित हुल्या अबी नईम इख़तिसार अलिफ़ पृष्ठ 51)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत शाहज़ादा हाजी अब्दुल मजीद ख़ान लुधियानवी रज़ि अपने एक ख़त में लिखते हैं।

"जब यह विनीत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत कर चुका। तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि परेशानियों के वक़्त नमाज़ इशा के बाद दो रकअत नमाज़ क़ज़ा-ए-हाजत अदा करके सौ दो सौ बार या इस से कम या अधिक इस्तिग़फ़ार और ऐसा ही सो दो सौ बार या कम तथा अधिक दुरूद शरीफ़ पढ़ कर ख़ूब दुआ माँगो अल्लाह तआला हाजतों को नहीं अटका वेगा।

(रिसाला दुरूद शरीफ़ सफ़ा132)

"एक अहमदी औरत ने एक बार मौलाना ग़ुलाम रसूल राजेकी रज़ि को ख़त लिखा कि मेरे दो लड़के बावजूद अच्छी शिक्षा रखने के अभी तक बेकार हैं आप उन के लिए दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह तआला उन के लिए कोई रोज़गार की अवस्था पैदा कर दे मौलाना साहिब ने उसके लड़कों के लिए निरन्तर कई दिन तक दुआ की यहां तक कि अल्लाह तआला की तरफ़ से रोया के द्वारा उन्हें बताया गया कि अगर उस के लड़के तीन लाख बार दुरूद शरीफ़ का विर्द करेंगे

तो उनकी तीन सौ रुपया तनख़्वाह लग जाएगी और अगर डेढ़ लाख बार दुरूद शरीफ़ का विर्द करेंगे तो डेढ़ सौ रुपया उनकी तनख़्वाह लग जाएगी।"

(हयाते क़ुदसी हिस्सा 1 पृष्ठ 61-62)

हमारे प्यारे आक़ा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ में आपकी शरीयत के ग़लबे और हमेशा स्थापित रहने और उम्मत के हक़ में आपकी शफ़ाअत से फ़ैज़ पाने की दुआ है और اَللّٰهُمَّ بَارِكْ में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त तथा महानता और शान और बुज़ुर्गी के हमेशा क़ायम रहने के लिए दुआ है।

अल्लाह तआला हमें हक़ीक़ी रंग में दुरूद पढ़ने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और इस दुरूद के कारण से हम जहां ख़ुदा तआला का सानिध्य प्राप्त करने वाले हों वहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में हमेशा तरक़्क़ी करते चले जाने वाले भी हों और आपकी शरीयत के फैलाने के काम में अपनी योग्यताओं को व्यतीत करने वाले हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा के अनुसार दुनिया से फ़ित्ना तथा फ़साद को ख़त्म करने के लिए अपनी भूमिका अदा करने वाले हों। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

(ख़ुत्बा जुम्अ:16 जनवरी 2015 ई)

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed Cell : 9949310679
: 9949209561

Plant Medicine
Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles
H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546
Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030
زبیر احمد شحنہ
ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

जमाअत का निज़ाम

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श

मकसूद अहमद भट्टी भूतपूर्व मैनेजर पत्रिका अन्सारुल्लाह भारत

किसी भी निज़ाम की कामयाबी और तरक़्क़ी की बुनियाद उस निज़ाम से सम्बन्धित लोगों और उस निज़ाम के नियमों की सम्पूर्ण पाबंदी करने पर आधारित होता है चाहे मज़हबी तरक़्क़ी हो या सांसारिक तरक़्क़ी हो उसका एक ही उपाय उसके तैय्यार किए गए नियमों की पाबंदी करने पर होता है इसी लिए दुनिया में जारी भौतिक और रुहानी निज़ाम में साझी बात "जमाअत" या "तन्ज़ीम"है। रुहानी दुनिया में तंज़ीम को क़ायम रखने के स्पष्ट उपदेश क़ुरआन मजीद में मौजूद हैं। जैसा कि अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फरमाता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا
الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ
شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ
تَاْوِيْلًا

(अन्निसा आयत 60)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो और अपने हुक्काम की भी। और यदि तुम किसी मामला में हुक्काम से मतभेद करो तो ऐसे मामले अल्लाह और रसूल की तरफ़ लौटा दिया करो अगर वास्तव में तुम अल्लाह पर और अन्तिम दिन पर ईमान लाने वाले हो यह बहुत बेहतर तरीक़ा है और अंजाम की दृष्टि से बहुत अच्छा है।

हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस आयतों की व्याख्या में फरमाते हैं कि

"अत: इस आयत में एक हक़ीक़ी मोमिन के बारे में एक उसूली बात वर्णन फ़र्मा दी है कि उसने अपने इताअत के गुण को स्पष्ट करना है,निखार कर दिखाना है,चाहे वह अल्लाह तआला की इताअत हो अल्लाह तआला के रसूल की इताअत हो या हुक्काम की इताअत हो हाँ अगर हुकूमत अल्लाह तआला और उस के रसूल के स्पष्ट हुक्म के विरुद्ध कोई हुक्म दे तो फिर बहरहाल अल्लाह तआला और उस के रसूल का आदेश प्रथम है परन्तु अगर मज़हबी मामलों में दख़ल अंदाज़ी नहीं है तो फिर हुक्काम चाहे मुस्लिम हों या ग़ैर मुस्लिम उन की इताअत ज़रूरी है।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 5 दिसम्बर 2014 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि

"ऊलुल अमर से अभिप्राय जिस्मानी तौर पर बादशाह और रुहानी तौर पर ज़माना का इमाम है।"

(ज़रूरतुल इमाम रुहानी ख़ज़ाइन भाग 13 पृष्ठ 493)

धार्मिक और रुहानी निज़ाम चूँकि अल्लाह तआला की तरफ़ से उस के रसूलों के द्वारा दुनिया में स्थापित होते हैं तो एक मोमिन को इन्हीं नियमों के अनुसार चलना होता है जो ख़ुदा तआला ने अपनी शरीयत के द्वारा बताए हैं और अपने अपने दौर में हर नबी ने इन रुहानी उसूलों पर चलने की राहनुमाई फ़रमाई कि निज़ाम शरीयत के अधीन ही ज़िन्दगी

गुज़ारने में भलाई और बरकत है। अल्लाह तआला का बहुत बड़ा उपकार है कि निज़ाम इस्लाम हम तक हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से पहुंचा। इसी लिए क़ुरआन मजीद ने हमें यह हुक्म दिया है कि यदि तुम सफल होना चाहते हो तो لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ अर्थात तुम्हारी मुक्ति तथा सफलता के लिए तुम्हारे लिए रसूल का आदर्श सबसे बेहतरीन नमूना है अगर तुम अपने नबी के आदर्श को अपना रोल मॉडल बनाओगे तो कामयाबी ही कामयाबी तुम्हारा भाग्य बनेगी इसी लिए अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फरमाता है

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱدْخُلُوا۟ فِى ٱلسِّلْمِ كَآفَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا۟ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيْطَٰنِ ۚ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ

(अल-बकर: 209)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम सब के सब इताअत (निज़ाम के दायरा)में दाख़िल हो जाओ और शैतान के क़दमों के पीछे न चलो। अवश्य ही वह तुम्हारा खुला खुला दुश्मन है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो इस आयत की तफ़सीर में फरमाते हैं कि

"हे मोमिनो!तुम सम्पूर्ण रूप से पूरे तौर पर इस्लाम में दाख़िल हो जाओ और इस की इताअत का बोझ अपनी गर्दनों पर कामिल रूप से पर रख लो। हे मुसलमानो! तुम इताअत और फ़रमांबर्दारी की सारे मार्ग धारण करो और कोई भी हुक्म न छोड़ो ।... इस लिए अल्लाह तआला मुस्लमानों को नसीहत फ़रमाता है कि बेशक तुम मोमिन कहलाते हो परन्तु तुम्हें याद रखना चाहिए कि केवल मुँह से अपने आपको मोमिन कहना तुम्हें नजात का अधिकारी नहीं बना सकता। तुम नजात हासिल करना चाहते हो तो इस का तरीक़ा यह है कि प्रथम हर प्रकार की मुनाफ़क़त और बेईमानी को अपने अन्दर से दूर करने की कोशिश करो और क़ौम के हर व्यक्ति को ईमान और इताअत की मज़बूत चट्टान पर क़ायम करो। द्वित्तीय केवल कुछ उपदेशों पर अनुकरण करके ख़ुश न हो जाओ। बल्कि ख़ुदा तआला के समस्त उपदेशों पर अनुकरण बजा और अल्लाह तआला के गुणों का सम्पूर्ण द्योत्तक बनने की कोशिश करो।"

(तफ़सीर कबीर भाग 2 पृष्ठ 456-477)

जब हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्तम आदर्श को देखा जाए तो आप ने इताअत और निज़ाम की पाबंदी के बारे में बहुत नसीहत फ़रमाई है। कुछ हदीसें नीचे वर्णन की जाती हैं।

हज़रत उबादा बिन सामत रज़ि से रिवायत है कि हमने हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत इस शर्त पर की कि हम सुनेंगे और इताअत करेंगे। आसानी में भी और तंगी में भी ख़ुशी में भी और दुख में भी और हम ऊलुल अमर से नहीं झगड़ेंगे और जहां कहीं भी हम होंगे हक़ पर क़ायम रहेंगे और किसी लांछना करने वाले से नहीं डरेंगे।

(मुस्लिम किताबुल इमारत)

बैअत के अर्थात वास्तव में बिक जाने के हैं अर्थात अपने आपको किसी के हाथ में बेच देना इताअत और निज़ाम जमाअत पर कामिल अमल करने की अवस्था में संभव है निज़ाम की पाबंदी और सम्पूर्ण इताअत का उदाहरण क़ुरआन मजीद ने शहद की मक्खी से दी है जिस तरह शहद की मक्खियां अपनी रानी मक्खी के इर्द-गिर्द घूमती रहती हैं इसी तरह मोमिनों को भी अपने नबी हज़रत

अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्तम आदर्श के अनुकरण के नतीजा में विजय और उन्नतियां मिलती हैं

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ निज़ाम जमाअत की इताअत और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय के बारे में वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं।

"निज़ाम जमात की इताअत की जाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद फ़रमाया है कि जिसने मेरे अमीर की इताअत की इस ने मेरी इताअत की और जिसने मेरी इताअत की उस ने अल्लाह तआला की इताअत की अत: निज़ाम जमअत को मामूली न समझें। ख़ुदा तआला के क़ुरब की राहें इताअत के मार्ग से गुज़र कर जाती हैं। इस लिए निज़ाम जमात की इताअत को अपना निशान बनाएँ हर अवस्था में आपने इताअत करनी है और निज़ाम जमाअत का सम्मान करना है इताअत एक ऐसी चीज़ है कि अगर सच्चे दिल से धारण की जाए तो दिल में एक नूर पैदा होता है और रूह में एक आन्नद और रोशनी आती है। मुजाहिदात की इतनी ज़रूरत नहीं जितनी इताअत की ,इताअत से महान इन्क़िलाब पैदा होते हैं।

(पैग़ाम जलसा सालाना जर्मनी 2006 ई उद्धरित मासिक अख़बार अहमदिया जर्मनी 2006 ई)

जैसा कि आरम्भ में ज़िक्र किया गया था कि किसी भी मज़हबी या दुनियावी इमारत की मज़बूती की बुनियाद उस के बनाए गए उसूलों के अनुकरण के बिना असमंभव है इसी लिए रुहानी तरक़्क़ी के लिए भी अंबिया की तरफ़ से की तरफ से स्थापित किए इलाही रुहानी निज़ाम का सम्मान करना भी ज़रूरी है। अल्हम्दुलिल्लाह अल्लाह तआला ने हमें इस ज़माने के मामूर इमाम मह्दी मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को मानने का सौभाग्य प्रदान फ़रमाया है इस लिए हर प्रकार की तरक़्क़ी भी समय के मामूर की इताअत से सम्बद्ध है। इस लिए हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"याद रखें कि दीनी और रुहानी निज़ाम चूँकि अल्लाह तआला की तरफ़ से उस के रसूलों के माध्यम से इस दुनिया में स्थापित होते हैं इस लिए बहरहाल अपने नियमों के अनुसार चलना होगा जो ख़ुदा तआला ने हमें बताए हैं और नबी के माध्यम से यह निज़ाम हम तक पहुंचा। अल्लाह तआला का यह बहुत बड़ा उपकार है अहमदियों पर कि न केवल हादी कामिल की उम्मत में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली बल्कि इस ज़माने में मसीह मौऊद और मह्दी की जमाअत में शामिल होने की तौफ़ीक़ भी उस ने प्रदान फ़रमाई जिसमें एक निज़ाम स्थापित है एक निज़ाम ख़िलाफ़त स्थापित है ,एक मज़बूत कड़ा आपके हाथ में है जिसका टूटना मुम्किन नहीं लेकिन याद रखें कि यह कड़ा तो टूटने की संभावना पैदा हो सकती है अल्लाह तआला की रस्सी को मज़बूती से पकड़े रखो और निज़ामे जमाअत से हमेशा चिमटे रहो क्योंकि अब इस के बिना आपकी बक़ा नहीं याद रखें शैतान रास्ता में बैठा है हमेशा आपको बहकाता रहेगा।"(ख़ुत्बा जुम्अ 22 अगस्त 2003 ई)

अल्लाह तआला हम सब को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस्ललम के आदर्श के अधीन ज़िन्दगियां गुज़ारते हुए जमाअत के निज़ाम की पाबन्दी की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन

....